मोहम्मद गजनी ने जाटों को खुश करने के लिए साहू जाटों से अपनी बहन का विवाह किया था।"

Reference Book: "History and study of the Jats" – by Sir Alexander Cunningham

ऐसा इतिहास जब पढ़ने को मिलता है तो आभास होता है कि जाटों के इतिहास के साथ कागजी क्षत्रियों की गाथाएं गाने वालों ने कितना अन्याय किया है| कहाँ ये जाट जिनसे अकबर के पुरखे अपनी बेटी ब्याहना गौरव की बात मानते थे, और कहाँ वो इन पाखंडियों के गाये कागजी शेर जो अपने राज बचाने को विदेशी आक्राँतों को अपनी बेटियाँ ब्याह देते थे|

इसके बावजूद भी पाखंड रचने वाले जाटों को कभी लाहौर के कोर्टों में शुद्र कहकर अपनी भड़ास निकालते हैं तो कभी उनकी social engineering system यानि "खाप-तंत्र" को outdated बता घड़ियाली रोने रो-रो के|

ऐसे में मुझे Thomas Edition की वो पंक्तियाँ याद आती हैं कि "A single sheet of exam paper can't decide my future", ऐसे ही इन कागजी शेरों की नकली कलमें can't decide the race/class of Jats"!

Thanks to Britishers who dared to write the true history, not only of Jats but of whole India.

Wow! After the story of Veer Gokula Ji Maharaj vs Aurengjeb and of Akbar vs 35 Jat Khap of Firozpur Punjab, it's the third such example in this category!

Phool Kumar Malik

Nidana Heights

Dated: 09/02/2014